



दो करोड़ घरों तक पहुंचा पीस ऑफ माइंड चैनल

आप सबको हमें यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि परमात्मा का संदेश जन-जन तक पहुंचाने के लिए बाबा ने अपना चैनल 'पीस ऑफ माइंड' दिया है। जिसमें 24 घंटे मधुवन मुख्यालय सहित देश-विदेश की सेवाओं के समाचार, अवेकनिंग विद् ब्रह्माकुमारीज़, तनाव मुक्त जीवन शिविर सहित राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के पूरे कार्यक्रम दिखाये जाते हैं। जिसमें परमात्मा का संदेश प्रसारित हो रहा है। पहले यह केवल रिलायंस डीटीएच पर ही देखा जाता था परंतु अब यह सेटलाइट के द्वारा भी उपलब्ध हो गया है। जिसे आप घर बैठे केबल नेटवर्क के द्वारा देख सकते हैं। आप अपने केबल ऑपरेटर से विनम्र आग्रह कर इस चैनल को प्रारंभ करवा सकते हैं। इसकी फ्रीक्वेंसी नीचे दी जा रही है:-

“C” Band with Mpeg4 Receiver,
Frequency - 4054
Symbol - 13230, Polarisation -
Horizontal
Setellite - INSAT - 4A
Contact For any Enquiry:
09549991111, 08104777111,
08104777222
कार्यालय का पता:- पीस ऑफ माइंड चैनल,
शांतिवन, तलहटी, आवू रोड, राज.
पिन कोड - 307510

सूचना

ओम शान्ति मीडिया में दो सेवाधारी की आवश्यकता है। जो कि कम्प्यूटर तथा हिन्दी व अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना जरूरी है। वे शीघ्र ते शीघ्र अपना वायोडाटा नीचे दिए गये ई-मेल पर भेजे या सम्पर्क कर सकते हैं। मोबाईल नंबर - 08107119445

Email-mediabkm@gmail.com

कैसे आता है..... पृष्ठ 6 का शेष

1. अस्थायी दर्द होना या अनस्टेबल एंजाइना - यह दिल में दर्द उठने का नया लक्षण होता है जो कि पूरे दिल के दौरे में भी परिवर्तित हो सकता है। इसके लिए ईलाज बहुत ही जरूरी है।
2. दिल के दौरा बगैर ई.सी.जी. में बदलाव - यह हल्का हार्ट अटैक होता है। जिसमें कि ई.सी.जी. के जांच में फर्क दिखता है। लेकिन अन्य खून टेस्ट से पता चलता है दिल को जरा सा नुकसान हुआ है। इस स्थिति में कोरोनरी आरटेरी और इसकी शाखाओं में थोड़ा रूकावट होता है।
3. दिल के दौरा के साथ ई.सी.जी. में बदलाव - यह भारी हार्ट अटैक होता है। जिसमें कि ई.सी.जी. की जांच में फर्क दिखता है। और अन्य खून टेस्ट से भी पता चलता है कि दिल को भारी नुकसान हुआ है। इस स्थिति में कोरोनरी आरटेरी और उसकी शाखा पूरी तरह से बंद हो जाती है। इस स्थिति वाले व्यक्ति को तत्काल ईलाज की आवश्यकता होती है।

उपचार में शामिल..... पृष्ठ 1 का शेष

कई व्याधियों से सहज ही छुटकारा पाया जा सकता है। ग्लोबल अस्पताल के निदेशक डॉ.प्रताप मिश्रा ने कहा कि बढ़ती व्याधियों से मुकाबला करने के लिए दवाई के साथ-साथ मेडिटेशन की भी आवश्यकता है। डॉ.निरंजना शाह ने कहा कि सहज राजयोग द्वारा मरीज स्वयं के अंदर निहित शक्तियों की ओर उन्मुख होकर व्याधियों से लड़ने की शक्ति प्राप्त कर लेता है। इस कार्यक्रम को डॉ. बनारसिलाल शाह सहित अनेक वरिष्ठ डॉक्टरों ने भी सम्बोधित किया।

स्वयं के लिए भी नियम बनायें

प्रश्न:- टी.वी. देखने के बाद आप किताब खोल करके बैठो या कम्प्यूटर खोल के बैठो, यह सब करना इतना आसान नहीं होता है?

उत्तर:- फिर माइंड को धीरे-धीरे वापिस उस स्टेज पर लेकर आना होता है। हमें यह समझना होगा कि टी.वी. और मीडिया का प्रभाव धीरे-धीरे हमारे माइंड की क्रियेटिविटी को प्रभावित करता है। आज मनोरंजन के नाम पर तो बहुत कुछ होता है।

प्रश्न:- आज हमें जो रियलिटी शो के नाम पर परोसा जा रहा है उसे हम देखने के लिए मजबूर हैं। हमारी आदत इतनी पक्की हो गयी है कि हम स्वीच ऑफ भी नहीं कर पाते और हम बोलते जाते हैं कि यह क्या दिखाया जा रहा है, सच के नाम पर क्या दिखा रहा है, शादी के नाम पर क्या दिखाया जा रहा है, रियलिटी शो में बच्चों के साथ उनका परफॉर्मेंस क्या दिखाया जा रहा है। यह एक ऐसा दृश्य है, जो हम सबको तकलीफ दे रहा है लेकिन फिर भी हम सब बैठकर देखते हैं, डिस्कस करते हैं। डिस्कशन का विषय क्या होता है कि आज रात का एपीसोड कितना अच्छा था। जब आप अगले दिन सुबह वॉक पर जायेंगे, ऑफिस जायेंगे तो वही डिस्कसन होगी। तो वो नेगेटिविटी सिर्फ देखने और सुनने तक सीमित नहीं रही लेकिन उसके बाद उसका इतनी देर तक प्रभाव रहता है कि पूछो मत!

उत्तर:- हम टी.वी. देखने के आदी हो गये हैं, न चाहते हुए भी हम टेलीविजन देखते हैं। हमें ये समझना चाहिए कि हम अपने अंदर क्या भर रहे हैं। आज बहुत सारी बातें जो हम समझते थे कि हमारे लिए गलत है या समाज की मर्यादाओं के हिसाब से ठीक नहीं है, आज उन्हीं सब बातों को सारे आम कहा जाता है। जब दुनिया से उसको इतनी स्वीकृति मिल रही है, उसको इतना बढ़ा चढ़ा कर प्रदर्शित किया जा रहा है, सारे लोग उसकी प्रशंसा कर रहे हैं तो हरेक का माइंड सेट कैसा क्रियेट होता जायेगा! लोग इसे स्वीकार कर रहे हैं, दिस इज ओ.के. माना यह ठीक है। जितनी वो सूचना इस तरह का अपने अंदर डालेंगे हमारी सोच की क्वालिटी क्या होती जायेगी? हमारा सही और गलत जो

शुश्रूमा जीवन जीने की कला (अवेकनिंग विथ ब्रह्माकुमारीज़ से)



-ब.कु.शिवानी

हम कभी-कभी सोचते तो थे कि ये सही है, ये गलत है। अब तो शायद हम उसके ऊपर बहुत ज्यादा सोच भी नहीं पायेंगे।

प्रश्न:- इतनी बड़ी बात हम न देखना भी चाहे तो क्या कहते हैं कि हमें उसके प्रभाव का पता ही नहीं था। हम कहते हैं कि एक बार देखने में हर्ज क्या है। पता तो चले कि चर्चा किस बात की हो रही है। क्या है ऐसा, देखें तो सही फिर ये उत्सुकता आगे बढ़ती ही जाती है!

उत्तर:- और हमारा मन उसको लेना शुरू कर देता है। आज आप चाहे बच्चों का कार्यक्रम देख लो, बच्चे उसमें किस तरह से कपड़े पहन रहे हैं, बच्चे उसमें किस तरह से परफॉर्म कर रहे हैं, उन्होंने उस गीत को कितनी बार देखा होगा कि वो लोग उसको उसी तरह सहजता से कर पा रहे हैं। और हम कहते हैं इट्स ओ.के. यह बच्चों का प्रोग्राम है। तो हमारे घर में बच्चे बैठकर उसको देख रहे हैं। कल अगर बच्चे वही कपड़े पहनना चाहते हैं, फिर हम उसके लिए इश्यू बना देते हैं। हम ये समझ नहीं पाते हैं कि वो इनफ्लूयेंस तो हमने ही दिया था। वो बच्चे ने देखा कि जब सामने उस आर्टिस्ट ने इस तरह के कपड़े पहने, इस तरह का परफॉर्मेंस किया, उसको सबसे इतनी प्रशंसा मिली तो वह बच्चा उसको स्वीकार कर लेता है और वह चाहता है कि मुझे भी लोग इसी तरह से देखें और स्वीकार करें। जब उसे ये सब चीजें मिल जाती है तो वह जीवन में भी उसकी कॉपी करने लगता है। वह इसके लिए प्रयास करना भी शुरू कर देता है। फिर वो कहता है कि मुझे ऐसे वाले कपड़े पहनने हैं। और ये सब कुछ खुशी के लिए हो रहा है। तो यह बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्नचिन्ह है।

इसके लिए घर में एक ऐसा माहौल बनना होगा कि हमें क्या देखना है और कितनी देर तक देखना है और मेरे ऊपर उसका कितना प्रभाव पड़ने वाला है। ये बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमें टी.वी. देखना है, हमें फिल्में देखनी है, कम-से-कम हम ये तो तय कर सकते हैं कि हम क्या देखें। अगर बच्चों को टी.वी. देखने से मना भी करना है तो पहले स्वयं को मना करना होगा, तभी उसका प्रभाव बच्चों पर पड़ेगा। अब आप अपने लिए भी नियम तय कर पायेंगे कि क्या देखना है, क्या नहीं देखना है।

कहीं न कहीं यह बहुत ही परिवर्तन की बात है कि अभी तक तो ये था कि टेलीविजन देखना ठीक है, मीडिया है उसका प्रभाव है, आंखें खराब हो जाती है, समय बर्बाद होता है। वास्तव में कितना हमारा पूरा माइंड का कंट्रोल, पूरा ही परिस्थिति पर जा रहा है और हमारी आदत बनती जा रही है। आने वाली जो परिस्थितियां हैं उन्हें हम स्वयं ही अपने मन का कंट्रोल दे देते हैं। यहां पर हमें चेक करने की आवश्यकता है।(क्रमशः)

अहमदाबाद। गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को 'रक्षा-सूत्र' बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु.सरला दीदी।



दिल्ली, पाण्डव भवन। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश ए.के.पटनायक को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.पुष्पा बहन।



धनास, चंडीगढ़। संसदीय मंत्री पवन कुमार बंसल को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.लाज बहन।



गया। बौद्ध मंदिर के भांते चलींदा को 'रक्षा-सूत्र' बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुनीता बहन।



दिल्ली। चौथी दुनिया समाचारपत्र के डायरेक्टर संतोष भरतीय को 'आत्म-स्मृति' का तिलक देते हुए ब्र.कु.अदिति बहन।



दिल्ली - पाण्डव भवन। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश एच.एल.गोयल को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.विजय बहन।